दुआ - उल - अ'दीला

(ईमान पर से भटकने से बचने की दुआ.)

अ'दीला मौत से मुराद, मौत के वक़्त हक़ से बातिल की तरफ़ फिर जाना है, यानी जाँ-कुनी (मौत) के वक़्त शैतान शक में डाल कर गुमराह कर देता है और यू इंसान ईमान छोड़ बैठता है!यही वजह है की दुआओं में ऐसे सूरते हाल से पनाह तलब की गयी है! फ़ख़रुल मोहक़्क़ेक़ीन ने फ़रमाया के जो मौत के वक़्त ईस ख़तरे से महफ़ूज़ रहना चाहता है इसे ईमान और उसूले दीन की दलीलें ज़ेहन में रखना चाहिए और फिर इनको बतौर अमानत ख़ुदा की बारगाह में पेश कर देना चाहिए ताकि मौत की घड़ी में यह अमानत इसे वापस मिल जाए! यह दुआ ईमान की हिफ़ाज़त करती है! सभी मोमिन क़ो चाहिए की शैतान क़ो सूर रखने के लिये ईस दुआ की बराबर तिलावत करें ताकि ईमान पक्का और मज़बूत रहे और ख़ैर का दामन हाथ से न छूटे! मरने के आखरी वक़्त में ईस दुआ की तिलावत ज़रूर करें, गर यह मुमकिन न हो तो किसी और क़ो कहें की ईस दुआ की तिलावत बुलंद आवाज़ में करे, ताकि मरने वाले के ज़ेहन में शैतान कोई शक न डाल सके, अपनों क़ो छोड़ने के ग़म में उदासी न हो, क्योंकि यह सारी शैतानी ताक़त शक और गुमराही पैदा करती है ताकि मरने वाला अपने ईमान पर न मर कर शक, गुमराही और उदासी की मौत मरे!

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद व आले मुहम्मद (तीन बार)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

शाहिदा अल्लाहु अन्नाहू ला इलाहा इल्ला हुवा वल मला'इ-कतु व उलू अल-इल्मी क़ा'इमन बिल क़ीस्ती ला इलाहा इल्ला हुवा अल-अज़ीज़ो अल-हकीमो इन्नद दीना इंदल लाहिल इस्लाम व अना अल अब्दु अल्द-दाई'फ़ू अल-मुज़'निबू अल-आसी'अल मुह्ताजू अल-हक़ीरू अश'हदू लिमुन'इमी व ख़ालीक़ी व राज़ीक़ी व मुक़ीमी कमा शहदा लिज़ा'तीही व शहदत लहू'अल मला-इ-कतु व उलू'अल इल्मी मिन इबादिही बी-अन'नहु ला इलाहा इल्ला हुवाज़ु' अन'नि अमी वल-इह्सानीवल क-रामी वल इत-मिनानी क़ादिरून अज़लियुन आलिमुन अबादियुन हय्युन अहदियुन मौजूदुन सर'मदियुन समी'यून बसी'रुन मुरी'अदुन कारिहून मुद्रिकुन समद'दियुन यस'त-हीक्कू हाज़िही अल्स-सिफ़ाती व हुवा अला मा हुवा अलय्ही फ़ि ईज़-ज़ी सीफ़ातीही काना क़'वीयन क़बला वुजुदी अल-क़ुदरती वल क़ुव्वती व काना अलीमन क़बला इजादी अल-इल्मी वल-इल्लती लम यज़ल सुल्तानन ईज़-ला ममला'कता व ला माला व लम यज़ल सुब'हानन अला जमी-अल अहवाली वुजुदोहू क़बला अल-क़बली फ़ि अज़्ली अल-अज़ाली व बक़ा'उहू बा-दा अल्बा-दी मिन गैरी इनती-क़ालीन व ला ज़वालिन ग़नियुन फ़ि-अल अव्वली वल-आख़िरी मुस्तग़-निन फ़ि अल-बातिनी वल-ज़ाहिरी ला जौरा फ़ि क़ाज़ी'यतेही व ला मय्ला फ़ि मशी'यतेही व ला ज़ुल्मा फ़ि तक़दीरेही व ला महरबा मिन हुकुमतेही व ला मलजा'अ मिन सता'वतेही व ला मन जन मिन नक़ेमतेही सबक़त रहमतुहू ग़ज़ाबहु व ला याफ़ूतोहु अहदुन ईज़ा तलाबोहू अज़'अहा अल इलाला फ़ि अल'तक-लिफ़ी व सव-वा अल-ताव्फ़ीक़ा बयना अल'ज़-इफ़ो वल-शरीफ़ मक'काना अदा'अ अल मा'मूर व सह-हला सबीला इजतिनाबी अल-

महज़ूरी लम यु'कल्लीफ़ अत-ता'अता इल्ला दूना अल-वोसे-अ वल-ता-क़ते सुभानोहू मा बयना करामहू व अ ला शा'नोहू सुभानोहू मा अजल-ला नय'लोहू व आ-ज़मा इह'सा-नोहू बा-असा अल अंबिया-अ ली'यु-बय्यिना अद'लोहू व न्साबा अल-औसिया-अ ली-यूज़हीरा तौलोहू व फ़ज़'लोहू व जा'अल्ना मिन उम्मती सय्यादी अल-अंबिया'ई व खैरी अल औलिया'ई व अफ्ज़ली अल-असफिया'ईव आला अल-अज़्किया'ई मोहम्मदीन सल-लल-लाहो अलैही व आलेही व सल्लामु बेहि व बीमा दा अना इलैही ना'अमन व बिल क़ुर'आनी अल-लज़ी अनज़ल'अहू अलैही व बे वसी'एही अल-लज़ी नसबहू यौमा अल- ग़दीरीव अश'अरा इलैही बे-क़ौलेही हाज़ा अली'युनव अश'हदों अन्ना अल-अ'इम्मता अल-अबरारावल ख़ुलाफ़ा अल-अख़'याराबादा अर-रसूल अल-मुख्तारीअली'युन क़मी'उ अल-कुफ्फ़ारी व मिन बा'देही सय्यादु औलादेही अल हसनू इब्ने अलीयिन सुम्मा अखु'अहू अल्स'सिब्तो अल्त'ताबियो ले'मार्ज़ाते अल-लाहे अल-हुस्सैनो सुम्मा अल-आबिदों अलीयुन सुम्मा अल बाक़िरो मोहम्मादुन सुम्मा अल-सादीक़ो जा'फ़रुनसुम्मा अल-काज़िमो मूसासुम्मा अल-रिज़ा अलीयुन सुम्मा अल-तक़ीयो मोहम्मदीन सुम्मा अल- नक़ीयो अलीयुन सुम्मा अल-ज़कियो अल-अस्करीयो अल-हसन सुम्मा अल-हुज्जतो अल-ख़'लफ़ो अल-क़ा'इमो अल-मुन्ता'ज़रो अल-मह'दियो अल-मुर्जा अल लज़ी बे'बक़ा'एही बाक़ी'अत अल'दुन्या व बी'युम्निही रुज़िका अल-वरा व बे वुजुदेही सबा'क़त अल'आरज़ू व़स'समा'उ व बेहि यमला'उ अल-लाहू अल-अर्दा क़ीस्तन व अदलन ब दमा मुली'अत ज़ुलमन व जौरण व अशहदों अन्ना अक़'वालोहुम हुज्जतन व इमतिहा'लहुम फ़री-दतून व ता-अतोहुम मफ़रू-दतून व मवद-दतोहुम लाज़ी'मतुन मक़-ज़ी-यतुन वल ईक़ती'दा-अ बेहीम मुंजी'यतुन व मुख़ाले'फ़तोहुम मुरदी'यतुन व हुम सादातु अहली अल-जन्नती अजमा'ईना व शुफ़ा-अ'उ यौमिद-दीन व अ-इम्मतु अहली-अल अर्जी अला-अल यक़ीनी व अफ़'ज़लू अल-औसिया'ई अल-मरज़ी-ईना व अश-हदू अन्ना अल-मौता हक़'क़ुन व मुसा-अ लता अल क़बरी हक़'क़ुन वल बा'असा हक़'क़ुन वल नशूरा हक़'क़ुन वल सिराता हक़'क़ुनवल मिज़ाना हक़'क़ुन वल हिसाबा हक़'क़ुन वल किताबा हक़'क़ुन वल जन'नता हक़'क़ुन वल नारा हक़'क़ुन व अन्ना अस'सा-अता आती'यतुन ल'रैबा फ़ीहा व अन्ना अल्लाहा यब'असू मन फ़ि अल-क़ुबूरी अल्लाहुम्मा फ़ज़-लुका रजा'ई व करामुका व रह'मतूका अ'मली ला अमला ली अस-तहीक्कू बेहि अल-जन्नता वला ता-अता ली अस्तौजिबू बिहा अल-रिज़वानाइल्ला अन्नी'ई तक़द'तू तौही'दका व अद्लका व तर'जय-तू एह्सा'नका व फ़ज़'लका व तशा-फ़्फा-अतु इलैका बिल-नबिय्यी व आलिहि मिन अहिब'बतिका व अन्ता अकरमु अल-अकरामीना राहेमीना अल-ह्मूव अर व सल-लल-लाहू अला नबी'य्यिना मुहम्मदीन व आलेही अजमा'ईना अल-तय्येबीना अल-ताहेरीना व सल-लमा तस्लीमन कसीरण कसीरण व लाहौ'ला व ला क़ुवता इल्ला बिल्ला हिल अलियुल अज़ीम अल्लाहुम्मा या अर्हमर राहेमीन इन्नी औदा'तुका यक़ीनी हाज़ा व सबाता दिनी व अन्ता खैरु

मुस्तौदा'ईन व क़द अमरतना बे'हीफ़ज़ी अल-वदा-ए-ई फ़'रुद-दहु अलैय्या वक़ता हुज़ूरी मौती व इन्दा मुसा'अ-लती मुन्करिन व नकीरिन बे रहमतिका या अर्हमर राहेमीन

अल्लाहोम्मा सल्ले अला मोहम्मदीन व आले मोहम्मद (तीन बार)

कई प्रमाणित रिपोर्ट के अनुसार निम्नलिखित कथन को भी दुआ में शामिल किया है:

अल्लाहुम्मा इन्नी अ-उज़ो-बिका मिन-अल-अदिया'लती इंदल'मौत

अ'दीला मौत से मुराद, मौत के वक़्त हक़ से बातिल की तरफ़ फिर जाना है, यानी जाँ-कुनी (मौत) के वक़्त शैतान शक में डाल कर गुमराह कर देता है और यू इंसान ईमान छोड़ बैठता है!यही वजह है की दुआओं में ऐसे सूरते हाल से पनाह तलब की गयी है! फ़ख़रुल मोहक़'क़ेक़ीन ने फ़रमाया के जो मौत के वक़्त ईस ख़तरे से महफ़ूज़ रहना चाहता है इसे ईमान और उसूले दीन की दलीलें ज़ेहन में रखना चाहिए और फिर इनको बतौर अमानत ख़ुदा की बारगाह में पेश कर देना चाहिए ताकि मौत की घड़ी में यह अमानत इसे वापस मिल जाए! ईस का तरीक़ा यह है की अक़ाएदे हक़'क़ा क़ो दोहराने के बाद कहें:

अल्लाहुम्मा या अर्हमर राहेमीन इन्नी क़द अव्दातुका यक़ीनी हाज़ा व सबाता दिनी व अन्ता खैरु मुस्तव्दा-ईन व क़द अमरतना बी-हीफ़ज़ी अल-वदा-ई'ई फ़ा रुद'दाहु आ'लय्या वक़ता हुज़ूरी मौती

ऐसी ही एक **दुआ हिफ्ज़े ईमान** के लिये::-
वाज़े रहे की शेख़ तूसी (अ:र) ने मोहम्मद सुलेमान वेल्मी से रिवायत की है की मै ने **ईमाम जाफ़र सादीक़ (अ:स)** की ख़िदमत में अर्ज़ किया के बाज़ शिया भाइयों का कहना है की ईमान की दो किस्में हैं, यानी एक मोहकम व साबित और दोस्सरा आरजी व इमानती जो ज़ायेल हो सकता है, बस आप मुझे कोई ऐसी दुआ तालीम फ़रमायें के जिसके पढ़ने से मेरा ईमान क़ायेम व साबित रहे और ज़ायेल न होने पाए! ईस पर आप (अ:स) ने फ़रमाया की हर वाजिब नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ा करो "

रज़ीयतो बिल-लाहे रब'बन व बी मुहम'मदीन सल-लल लाहो अलय्ही व आलेही नबीयाँ व बिल इस्लामी दीनन व बिल क़ुर-आंनी किताबन व बिल का'बते क़िब'लतों व बे अलीयिन वलीयन व इमामन व बिल हसनी व बिल हुसैन व अली-इब्निल हुसैन व मुहम्मद इब्ने अलीयिन व जाफ़र इब्ने मुहम्मदीन व मूसा इब्ने जा'फ़रीन व अली इब्ने मूसा, व मुहम्मद इब्ने अलीयिन व अली इब्ने मुहम्मदीन वल हसन इब्ने अलीयिन वल हुज्जत इब्ने अल हसने सल्वातु अल्लाहि अलय्हीम अ-इम्मतन अल्लाहुम्मा इन्नी रज़ी'अतु बिहिम अ-इम्मतन फ़ा अर'ज़नी'अ-लहुम इन्नका अला कुल्ले शय'ईन क़दीरून